>

Title: Need to take measures to increase production of milk in the country.

श्री सुरेन्द्र सिंह नागर (गौतम बुद्ध नगर): मवेशियों के विकास व उत्पादकता में सुधार विषय पर नवंबर, 2012 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डेयरी व पशुधन वैज्ञानिकों ने भारत की परंपरागत नस्लों के दुधारू पशुओं के संरक्षण पर जोर दिया गया हे । पशुओं के चारे की कमी को पूरा के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उप-महानिदेशक का कहना हे कि सरकार के स्तर पर प्रयास किए जा रहे हैं । लेकिन पशु चारे की मांग व आपूर्ति में कोई सुधार नहीं हो सका है । उन्होंने गैर उत्पादक पशुओं को कम करने पर भी जोर दिया है ।

हमारे देश में मवेशियों की संख्या विश्व के किसी भी देश के मुकाबले सर्वाधिक है। लेकिन, दूध के उत्पादकता के मामले में हमारा देश बहुत पीछे है । यहां 2200 लीटर प्रति वर्ष प्रति पशु के वैश्विक औसत के मुकाबले केवल 990 लीटर दूध ही पैदा होता है । पशु चारे की भारी कमी और अच्छी नस्ल के पशुओं का भी अभाव इसकी एक प्रमुख वजह है ।

राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान के निदेशक के अनुसार देश में सूखे चारे की 11 प्रतिशत, हरे चारे की 35 प्रतिशत और सकेंद्रित चारे की 45 प्रतिशत कमी है । यह स्थिति पिछले लगभग एक दशक से बनी हुयी है । देश में अनुत्पादक पशुओं की संख्या में निरंतर वृद्धि हो रही है, जिसको कम करने की आवश्यकता है । इंटरनेशनल स्टॉक रिसर्च इंस्टीट्यूट द्वारा विश्व की खाद्य सुरक्षा के लिए डेयरी उत्पाद व पशु उत्पादों को अत्यंत जरूरी बताते हुए भारत की भूमि को सबसे अहम बताया गया है ।

मेरा सरकार से अनुरोध है कि वह देश में मवेशियों के विकास व उत्पादकता में व्यापक स्तर पर सुधारात्मक उपाय किए जाने हेतु आवश्यक पहल करे ।